ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 8, Issue 12, December 2018 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

हरियाणा की संस्कृति का केंद्र : भिवानी

Priti[1], Dr. Paras Verma[2], Dr. Narindar Kumar[3]

Department of Geography

[1,2,3]OPJS University, Churu (Rajasthan) – India

सार

दक्षिण में थार रेगिस्तान को छूता हुआ भिवानी हरियाणा प्रदेश का एक प्रमुख शहर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से 2016 से पहले भिवानी हरियाणा का सबसे बड़े जिलों में शामिल रहा है। इसके अलावा, भिवानी नगर शिक्षा, चिकित्सा एवं खेलकूद के क्षेत्र में आज अपनी अनूठी पहचान बना चुका है। सांस्कृति दृष्टि से भी भिवानी आजादी से पहले से महत्वपूर्ण शहरों में से एक रहा है।भ्याणी, भिवानी, मिनी क्यूबा, राजनीति का गढ़ कहा जाने वाला प्रदेश का जिला भिवानी एक लंबा इतिहास सहेजे हुए है। या यूं कहें भिवानी शहर की स्थापना के पीछे एक ऐतिहासिक कहानी है। महाराजा नीमसिंह ने 26 फरवरी 1376 को अपनी पत्नी भानी के नाम से इस शहर की स्थापना की थी। भानी की मौत होने के बाद नीमपाल सिंह ने भानी गांव की स्थापना की थी। कालांतर में भानी को भ्याणी, भियानी और इसके बाद वर्तमान में भिवानी कहा जाने लगा है।

कुंजी शब्द : हरियाणा, भिवानी, भिवानी का इतिहास, भिवानी की संस्कृति

1.प्रस्तावना

भ्याणी, भिवानी, मिनी क्यूबा, राजनीति का गढ़ कहा जाने वाला प्रदेश का जिला भिवानी एक लंबा इतिहास सहेजे हुए है। या यूं कहें भिवानी शहर की स्थापना के पीछे एक ऐतिहासिक कहानी है। महाराजा नीमसिंह ने 26 फरवरी 1376 को अपनी पत्नी भानी के नाम से इस शहर की स्थापना की थी। भानी की मौत होने के बाद नीमपाल सिंह ने भानी गांव की स्थापना की थी। कालांतर में भानी को भ्याणी, भियानी और इसके बाद वर्तमान में भिवानी कहा जाने लगा है।

इतिहासकार बताते हैं कि महाराजा नीमपाल सिंह द्वारा स्थापना के समय लगाया गया पेड़ आज भी लोहड़ एरिया में मौजूद है। परंतु कुछ लोगों का मानना है कि यहां हिंदू धर्म की देवी माता भवानी ने अपने चरण

रखे थे और उससे इसका नाम बिगड़ कर भिवानी पड़ा। मुगल काल में यह एक महत्वपूर्ण औद्योगिक नगर था और आज भी हरियाणा और राजस्थान के बीच उद्योग का केंद्र है।

1.3 भिवानी का परिचय

हरियाणा राज्य का राज्यस्थान से लगता भिवानी जनपद आज के परिवेश में महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है। भिवानी जनपद में 444 गांव सम्मिलित है। भिवानी जनपद के नामकरण के बारे में कई किवंदतिया प्रचलित रही है। कुछ लोगों की मान्यता है कि ठाकुर भवानी सिंह और भानी सिंह दो भाई थे। भानी सिंह ने बवानी खेड़ा बसा लिया था।

भवानी सिंह भी अपना एक गांव बसाने के लिए चला, इस समय जहां भिवानी बसा हुआ है। वहां एक जंगल पड़ा था। जब भवानी सिंह जंगल से गुजर रहा था तो डोबी (एक तालाब (जोहड़) जो अब भी मौजूद है के पास एक शेर बकरियों के झुण्ड के पास से गुजर गया। बकरियों को उसने कोई नुकसान नहीं पहुंचाया तो भवानी सिंह ने सोचा यह जगह बहुत अच्छी होगी। अगर यहां गांव बसा लिया जाए तो कभी हिसांत्मक कार्य नहीं होगा। भवानी सिंह ने उस समय मिवानी को बसाया था। भवानी से भियानी तथा बिगड़ कर भिवानी नाम पड़ गया।

पुराने समय में बड़े व्यक्ति अपने नाम से किसी ग्राम या खेड़े को बसाकर अपनी को प्रसिद्ध किया करते थे। कुछ लोग कहते है कि साढ़ और हर पाल भाई थे साढ ने राज भी और हरपाल ने गुराणा ग्राम बसाया। इन्ही की परम्परा से 5 राजपूतों ने यहाँ से आकर लत्वा से लुहारी, तिगर सिंह ने तिगरी, तिगड़ सिंह से तिगड़ाना, कुंगर सिंह से कुगंड तथा मानसिंह ने मैणी गांव बसाएँ। इन्हीं के पुत्रों में से भवानी सिंह तथा भानों सिंह राजपूत हुए जिन्होंने बवानीखेड़ा, भिवानी आदि बसाए।

इन लोगों की मान्यता है कि राजपूत 440 गांवों से कर वसूल करते थे। इन्हीं की परम्परा से ठाकुर नीम सिंह ने भिवानी जनपद बसाया। कुछेक लोगों की मान्यतायह भी है कि भवानी सिंह की धर्म पत्नी यहाँ पर सती हुई थी। जिसके कारण उसके नाम पर भवानी गांव बसा था फिर भयानी से परिवर्तित होता–होता मिवानी हो गया तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण पूरे जनपद की संज्ञा प्राप्त कर ली।

भवानी

(पार्वती) शिव की पत्नी के नाम पर भिवानी के नामकरण की चर्चा भी विद्वानों ने की है। हरियाणा प्रदेश 1 नवम्बर से पहले पंजाब के अर्न्तगत ही था। इसको एक नवम्बर 1966 को अलग किया गया। भिवानी जनपद की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सुदृढ एवं महत्वपूर्ण है। यह जनपद बांगड़ क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। भिवानी का भी हरियाणा के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। गुप्तकाल से भी मिवानी के ऐतिहासिक सम्बन्ध हरियाणा से इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि इसकों पृथक करके देखने से वस्तु स्थिति का जायजा नहीं लिया जा सकता किसी भी प्रदेश या जनपद का अध्ययन तमी सम्पूर्ण कहां जा सकता है। जब उसके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को समझा जा सके।

दिल्ली की सीमा से लगता, गंगा तथा घग्घर नदियों के बीच बसा हरियाणा जिसके आंचल में सरस्वती जैसी पवित्र नदी बहती आई है। अपनी लोक संस्कृति रीति–रिवाज, खान–पान, रहन–सहन, और भाषा की दृष्टि से एक ईकाई रही है। भिवानी जनपद का हम ईकाई में कम महत्व नहीं रहा है। यहाँ पर भिवानी जनपद की ऐतिहासिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक, पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालना मुख्य ध्येय है।

1.4 भिवानी – जनपद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भिवानी जनपद का ऐतिहासिक महत्व भी 1857 की क्रान्ति तथा स्वतन्त्रता संग्राम में तथा अन्य प्रसिद्ध युद्धों में कम नहीं रही है।प्रथम स्वाधीनता संग्राम से पहले भी भिवानी में अपनी प्रशासन लागू करने में अग्रेजों को बहुत संर्घष करना पड़ा। सन् 1810 में ऐडवर्ड गार्डीनर अपनी बड़ी सेना लेकरभिवानी पहुंचा तथा अधिकार जमाने के लिए काफी संर्घष करना पड़ा।

मेरठ विद्रोह में जोसैनिक थे उनमें से अधिकतर गुड़गांवा, रोहतक तथा भिवानी के थे 1857 की क्रान्ति से पहले ठाकुर पैमासिंह ने गोरी सेना से जूझकर जो गौरव प्राप्त किया, उसे यहां की जनता किर्ति गाथाके रूप में गाती हैं उस समय भिवानी पर अधिकार जमाने कर्नल सेना लेकर आया तो बालावासगांव से ठाकुर पैमासिंह ने देखते ही देखते पालवास, नाथुवास, कालवास तथा अन्य निकट के गावों से अपनी अलग सेना बना ली। साथ ही दिनोदा, बापोड़ा हलवास, रिवासा, ढाणी माहू, बजीना आदि गांवों के असंख्य जवान भी देशी हथियार लेकर गोरी फौज को खदेड़ने के लिए. रातों–रात ठाकुर प्रेमसिंह के पास पहुंच गये तथा रात में ही अचानक गोरी सेना पर हमला बोल दिया जिसमें वीर प्रेम सिंह तो वीरगति को प्राप्त हो गया परन्तु जीत भिवानी के वीरों की हुई। . इतिहास साक्षी है कि कर्नन बाम की हत्या करके उसे ठाकुर पैमासिंह की समाधी के साथ ही दफमाया गया। सन् 1920 में असहयोग आन्दोलन के कारण जो नेता गिरफ्तार किए गए उनमें से अधिकतर भिवानी और रोहतक के ही थे।

इसके उपरान्त रोहतक के जिला धीश की कोठी पर तिरंगा झण्डा लहराया, गिरफ्तारियां हुई – गिरफ्तार युवक व तिरंगा लहराने वाले मिवानी के ही थे। मिवानी के नौजवानों ने आन्दोलन की अग्नि में तेल का काम करके विदेशियों को आश्चर्य चकित कर दिया।

लोहारू

लोहारू काण्ड इतिहास में प्रसिद्ध है। 1802 में ब्रिटिश सरकार ने इस रियासत काकार्य भार नवाब अहमम बख्स को सौंपा था। कई वर्षों तक इसी वंश के व्यक्ति नवाब रहे। लोगों पर कर बढ़ा दिया। सुखाग्रस्त क्षेत्र होने के कारण लोग कर देने में असमर्थ थे। सामन्त विलासी और आराम तलब हो गए थे। सन् 1917 में कासणी गांव का दिलसुख सूबेदारी से सेवानिवृत्त पाकर आया और किसानों के कर को देखकर अंचमित हो गया वह गागड़ गाँव के मुखिया पूर्णमल जैलदार को साथ लेकर बढ़ा। टैक्स के विरोध में आन्दोलन चलाया। राजा बलात् कर लेता था। यहाँ तक कि विधवा विवाह पर भी समाज विरोधी होने के कारण कर वसूल किया जाता था। 1931 में बावनी खाप की पंचायत ने दिलसुख को अपना राजा तथा हवलदार उदमी तथा चौधरी के हरसिंह को मंत्री चुना तथा लोहारू के नवाब के खिलाफ इश्तिहार छपवाकर हिसार, भिवानी, दिल्ली में बांटे गए।

ठाकुर भगत सिंह इश्तिहारों का बण्डल नवाब की चारपाई के नीचे रात को रख आया। चेहड़ तथा गोलागढ़ इन वीरों के केन्द्र थे। 1633 में अंग्रेज ऐजर ने गांव चेहड़ में ढाई घण्डे लूटमार की, जिसमें तीन मन चांदी तथा पांच सेर सोना लूटा गया 76 लोगों को कैद कर लिया गया। सिंघावी गांव के 22 देश भक्तों को गोली से उड़ा दिया गया। यह समाचार मिवानी तथा पूरे हरियाणा में फैल गया तथा ए. के. देसाई, चौधरी छोटूराम पंडित नेकी राम शर्मा की अध्यक्षता में कमेटी बनी तथा आन्दोलन चाल। नवाब को करों में कमी करनी पड़ी।

दादरी

दादरी तहसील का भी ऐतिहासिक स्थानों में अपना अलग ही महत्व है। फरवरी 1948 में भारत सरकार द्वारा प्रस्ताव पास किया गया कि रियासत को तोड़कर हिसार जिले में मिला लिया जाए। इस पर दादरी में हजारों लोगों ने इकट्ठे होकर महाराज के विरुद्ध नारे लगाए। मेजर अमीर सिंह तथा लहरी सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। जनता में विस्फोट हो गया और लगभग पच्चीस हजार लोगों ने दादरी के नवाब

को घेर लिया।25 फरवरी 1948 को दादरी को अलग स्वतन्त्र कस्वा घोषित कर दिया गया। गुलामी के जुए को जनता ने उतारफंका। बाढड़ा के थानेदार से भी हथियार डलवा लिए गए।

श्री महताब सिंह को अपना राजा तथा श्री रामकृष्ण गुप्त को दादरी का नाजिम बना दिया गया तथा आजाद हिन्द फौज के मेजर राजा राम को आन्दोलन का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया गया। दादरी जीन्द राज्य का बह जन क्षेत्र था, जहां से जन–जागरण की भावना को प्रज्वलित किया।

रोहतक और भिवानी के नजदीकहोने के कारण यह स्वाधीनता आन्दोलन में हरियाणा का मुख्य केन्द्र बना जीन्द राज्य का सर्वश्रेष्ठ नेता ही दादरी का निवासी था आर्य समाज की धार्मिक जन क्रान्ति का सूत्रपात भी बनारसी दास गुप्त ने मिवानी में किया। फिर 1938 में राजनीति में शामिल हो गए। जीन्द सरकार ने उनसे कुएं से घड़स तक खिचवाएं, बेड़िया पहनाई, परंतु इन सबको को हंसते–हंसते श्री गुप्त ने सहा। – आज भी वे अपनी प्रतिष्ठा राजनीति में बनाए हुए है।

हरियाणा में रियासती क्षेत्र में प्रजामण्डल का सबसे बड़ा केन्द्र दादरी रहा है। हीरासिंह चिनारिया, बनारसी दास गुप्त, रामकिशन गुप्त, श्री महताब राय, मंगला नम्बरदार आदि देश भक्त दादरी क्षेत्र से ही सम्बन्धित है।

मिताथल और औरंगाबाद गाँव भी किसी समय में ऐतिहासिक केन्द्र रहे है। अति प्राचीन मूर्तियां यहां से खुदाई करके निकाली गई है जो इस बात की साक्षी है कि मिता स्थल किसी समय में बहुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केन्द्र था। तोशाम के भी अनेक शिलालेखों से पता चलता है कि यहां प्राचीन समय से ही लोग अपने धर्म और कर्तव्य पालन में कट्टर थे।

1936 में काग्रेस के प्रधान सुभाषचन्द्र बोस ने मिवानी की जनसभा में बोलते हुए कहा था। "याद समी हिन्दुस्तानी एक आवाज से ब्रितानी साम्राज्य को चुनौती भर दे तो भी ब्रिटिश लोग यहां से भाग जाएगें। इस ओजपूर्ण भाषण से यहां के लोगों में ऐसे जनक्रान्ति फैली की जन–आक्रोश ने ही स्वतन्त्रता प्राप्त करवाई। यहाँ के हजारों लोगों ने हंसते–हंसते जान गवा दी। आजाद हिन्द फौज में हरियाणा के कुल 284 अफसरों और जवानों ने भाग लिया जिसमें से 346 शहीद हुए।

भिवानी

मिवानी तहसील के अन्तर्गत 114 गांवों को शामिल किया गया है इसका क्षेत्रफल 337398 वर्ग मी० है। मिवानी तहसील के कुछ गांवों की सीमा रोहतक से लगती है ये गांव है चांग. रिवाड़ी, फूलपुर, पालवास आदि। मिवानी तहसील के अन्तर्गत आने वाले मुख्य ऐतिहासिक गांव निम्नलिखित हैं। मित्ताथल, तिगड़ाना, घुसकाणी, तालू भिवानी से दक्षिण व दक्षिण पश्चिम की ओर स्थित बापोड़ा, दनोदा, बजीना, बीरन, मानहेरु, धारेहु, हेतमपुरा, लुहानी, राजगढ़, रुपगढ़, जूई. ढाणी माहू, गोलागढ़, आसालवास आदि।

उपर्युक्त गांवों में कुछ गावों में राजपूत, जाति की संख्या अधिक है। क्योंकि मिवानी की मींव राजपूतों द्वारा ही डाली गई थी। तिगड़ाना, बड़ेसरा, रिवाड़ी. फूलपुरा, बापोड़ा, मानहेरू, बजीना, आदि गांवों में राजपूत जाति के लोगों की अधिकता है। बाकि गांवों में जाट, ब्राह्मण, जाति के साथ–साथ नाई, धोबी, तेली, झीमर, सुनार, दर्जी, खटीक, लुहार, हरिजन, बाल्मीकि, खाती, व बणियों की संख्या अधिक है।

हरियाणा में भिवानी जनपद जैसा दयालु और जनपद शायद ही हरियाणा में क्या भारत में ही कोई हो। दादरी में हररोज रेलवे स्टेशन पर एक बोरी आटे की रोटी यात्रियों को खिलाई जाती है। भिवानी, दादरी, तोशाम, लुहारु में हर चार कदम पर ठण्डे पानी की प्याऊ मिलेगी। सेठ करोड़ीमल लुहारी जाटू वाला और छाजूराम अलखपुरा वाला भारत के माने हुए दानियों में उच्च स्थान रखते हैं। भिवानी के बानिये भारत में प्रसिद्ध हैं। अपनी आय का 25 दान में व्यय करके ये सेठ पुण्य कमाते हैं।

भिवानी जनपद के तहत तीन प्रकार की बोलियों का पुट विशेष मिलता है। बवानीखेड़ा तहसील के तथा भिवानी तहसील के उत्तर तथा कुछ पूर्वी पश्चिमी गांवों की बोली बांगरुहै। सिवानी के आस–पास राजसथान के लगते गांवों में राजस्थानी बोली का प्रभाव परिलक्षित होता है तथा लोहार का क्षेत्र जो महेन्द्रगढ़ से लगता है उनमें अहीरवाटी बोली का प्रचलन है।

मिवानी के मुख्य गांवों में मिताथल, तोशाम, औरंगाबाद, दादरी बेहड़ आदि का सांस्कृतिक एवम् ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्व है।

1.5 भिवानी जनपद की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

भिवानी जनपद हरियाणा का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक केन्द्र रहा है। तोशाम, लोहारु दादरी, मित्ताथल, औरंगाबाद आदि में अति प्राचीन संस्कृति की झलक मिलती है। संस्कृति के सभी तीज. त्यौहार आदि के सयोग से इस प्रदेश विशेष की मूल्यवत्ता बनी रही है। औरंगाबाद और मिताथल प्राचीन काल में महत्वपूर्ण कस्बे रहे हैं, भले ही आज के परिवेश में इनका महत्व गौण हो गया है।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 8, Issue 12, December 2018 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

1.6 भिवानी जनपद के गांवों का स्वरूप

जनजीवन की झांकी से किसी गाँव के वास्तविक स्वरुप को देखने से ही परिचय प्राप्त किया जा सकता है। कई बड़े–बड़े गांवों की जनसंख्या शहर जितनी ही होती है, परन्तु लहजा, रहन–सहन, खान–पान, आतिथ्य सत्कार यानि की स्वरुप गांव का होता है। पहले एक परिवार के लोग अपनी अलग–अलग बस्ती बना लेते थे। धीरे–धीरे वह बस्ती पूरे गांव का रुप धारण कर लेती थी, उसमें अन्य जातियों के लोग भी आ बसते थे। एक उच्च परिवार में 5 सदस्य होते तो वे पांच गाँव बसा लेते थे। इसी तरह कोई 'पंचगाम्मा' कहलाता या "संतगाम्मा।'

भिवानी जनपद में भी इसी तरह गावों का विकास हुआ। यहाँ हर एक गाँव की पंचायत होती है जो गाँवों के झगड़े निपटाने, नवविकास करने आदि का काम करती है। यदि कोई बड़ा झगड़ा एक गाँव की पंचायत से नही निपटता है तो कई गांवों की पंचायता बुलाकर उस झगड़े का समाधान किया जाता है कई मुख्य गांवों की पंचायत बहुत प्रसिद्ध होती है, जिसे मुख्य झगड़े के निपटारे के लिए आमंत्रित किया जाता है।

आजकल बड़े–बड़े झगड़े न्यायालय में जाते हैं। पंचायत के लोगों की इतनी आस्था नहीं रही। गाँव के स्वरूप को वर्णित किया जाए तो भिवानी जनपद में लगभग सभी गांवों का स्वरूप इस प्रकार का होता है कि गांवों में ऊंची चोटी वाला शिवालय होता है। जो दो–तीन मील दूर तक दिखाई देता है। हर गांव की एक बणी होती है। वणी–गांव की बाहरी सीमा से लगती है तथा वणी में जोहड़, कुएँ आदि होते है। वहीं पर विटोड़े (उपलों से भरा हुआ एक गुम्बद सा) होते हैं।

हरियाणा में एक कहावत है कि गांव की शोभा तो बिटोड़े–ए बताद्धये सै। अर्थात् बिटोड़े लगाने की भी एक कला होती है। जो हरेक एक को नहीं आती। गांव के बीचो–बीच कच्ची या ईटो की गलियां मिलती है। दोनों तरफ मकान कोई कण्या कोई पक्का होता है। गाँव में एक (चोपाल) परसश होती है। जिसमें पंचायत होती है। इसमें बरात रुकती है तथा सिलाई केन्द्र आदि भी खोला जाता है। परस में हूक्के–पानी का पुरा प्रबन्ध होता है। गाँव में एक तरफ तालाब तथा बाबा गूगा की मेडी होती है। सतियों की समाधि बनी होती है। ग्राम देवता या देवी का मन्दिर होता है जोहड़ या तालाब के चारों तरफ ऊँचे–ऊँचे नीम, पीपल, बड़, जामुन, आदि के वृक्ष होते हैं जिनकी छाया में असंख्य पशु–पक्षी विश्राम करते हैं वृक्षो की टहनियां एक तरफ जोहड़ में प्रतिविम्बित होती है तो दूसरी तरफ कुएं में।

हर एक घर की एक बैठक होती है, जिसमें अतिथियों को बिठाया जाता है। गांव में एक उक्ति है कि घर में थोड़ा ब्योत होया तो या तो घर बढ़ौगा या ब्याह में पीसा लागेगा। घर जितना अच्छा होगा उतनी प्रतिष्ठा होगी। आजकल इसलिए पिच्चानवें प्रतिशत मकान पक्के मिलते है। कच्चे मकान लिपे–पुते मिलेगें। घर के आंगन में एक तरफ हारा मिलेगा जिसमें दूध या पानी गर्म रखा होगा या सब्जि व पशुओं का दलिया होगा। एक दिवार में पैंहड़ी लगी होती है जिस पर पानी के मटके रखे मिलेगें।

एक कोठे में घी, शक्कर, दाले, तिल आदि खाने की सामग्री मटकों में रखी मिलेगी। टाण्डी पर सन के बण्डल गुड़ या पुराना सामान पड़ा हुआ मिलेगा। दूसरे कोठे में साल भर का अनाज एक बुखारी में भरा मिलता है। बैठक में चारपाई. मूढे, पानी का मटका हुक्का आदि अवश्य होता है। कोई मुसाफिर रुक जाए तो कोई आपत्ति नहीं उठाता बल्कि उसकी सेवा की जाती है।

लोग सुबह उठकर खेत में चल देते तो साथ–साथ कलेवा (सुबह की प्रथम पहल का अन्त) की रोटी लेकर घरवाली पहुंच जाती है। वह रोटी देकर या तो काम करवाती है। या घर जाकर गोबर, दुआरी आदि करके दोपहर का खाना बनाती है। दोपहर खेत में एक टोकरे में बैलों का चारा तथा उसमें खेत में काम करने वाले सभी का खाना खाकर खेत में ले जाया जाता है। खेत वाले खाना खाकर बैलों को चारा डालकर हुक्का आदि पीकर कुछ आराम करते है तथा कुछ देर आराम करने के बाद बैलों को पानी पीलाकर फिर काम में जूट जाते है।

गृहणी घर आकर कुछ आराम करती है। फिर पानी भरने का समय हो जाता है। पानी भर कर रोटी–पानी का प्रबन्ध शुरू करती है। गृहणी को कभी आराम नहीं मिलता द्य कमी खेत में खुदाई, कमी रोटी देकर, कमी ईधन लाना कभी उपले लाना, कभी पानी लाना, कभी जोहड़ पर कपड़े धोकर लाना, तीन समय की रोटी पकाना आदि।

सारा दिन काम में लीन रहती है। सारा जीनव व्यस्तता में व्यतीत होता है। बच्चों को घर में मौजूद बुढ़िया रख लेती है। किसान भी शाम को घर आकर बैलों को चारा डालकर, दूध निकालकर नहाता है तथा रोटी खाकर कुछ मनोरंजन करने के लिए चौपाल या बैठक में जा बैठता है। हंसी मजाक चलता है फिर घर आकर सुबह उठने की चिन्ता लिए मीठी नींद में सो जाता है।

निष्कर्ष

भिवानी हरियाणा का एक जनपद है, इसके कारण जिस प्रकार के परिवर्तन हरियाणा में हुए है, उसके प्रकार के सामाजिक परिवर्तन भिवानी में भी हुए हैं। वहां भी शिक्षा के प्रसार के कारण महिलाओं ने घर की चारदीवारी से निकलकर कामकाजी की भूमिका में नजर आने लगी है। लोगों में की सोच में बदलाव आया है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण लोग आधुनिक बने है, जिससे लोगों के खान–पान एवं पहनावे में भी परिवर्तन हो रहा है। पुरानी सामाजिक संरचना जहां संयुक्त परिवारों को प्राथमिकता दी जाती थी, टूटने लगी हैं। अब लोग एकल परिवार को अधिक महत्व देने लगे है। दूध–दही, छाछ मठे का स्थान पेप्सी और कोकाकोला ने ले लिया है। देसी खाने के स्थान पर विदेशी फास्ट फुड वहां लोकप्रिय होने लगा है। बैलगाड़ी का स्थान कार ने लिया है। कहने का तात्पर्य है कि धीरे–धीरे भिवानी की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होने के कारण स्त्री और पुरुष दोनों कामकाजी हो गए है, जिससे परिवार की आय में वृद्धि हुई है। आय में वृद्धि होने के कारण लोगों की क्रय शक्ति भी बढ़ी है, जिससे क्षेत्र, राज्य और देश की अर्थव्यवस्था में सुधार आया है। सामाजिक में हुए परिवर्तन का सीधा प्रभाव क्षेत्र के विकास पर पड़ा है। जहां बेलगाड़ी या साइकिल से यात्रा करने में लोगों का अधिक समय लगता था, वहीं कार और मोटर बाइक ने उनकी यात्रा को सुगम बना दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, संजय, हरियाणा, सामान्य ज्ञान, (2015), अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड, मेरठ,

2. भारद्वाज, ओ.पी., हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, (1978), भाषा विभाग, हरियाणा सरकार, प्रथम संस्करण।

3. डॉ. भारद्वाज, विष्णुदत्त, हरियाणा की लोकसंस्कृति, (1996), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

4. सिंह, वीरेन्द्र, हरियाणा विस्तृत अध्ययन, (2008), अरिहन्त पब्लिकेशन्स, मेरठ, उत्तर–प्रदेश।

5. कादयान, ओम प्रकाश, हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर, (2003), गुरु जंभेश्वर प्रकाशन, हरियाणा।

9. शर्मा, विश्वबंधु, हरियाणा भाषा रू स्वरूप और पहचान, (2006), अनंग प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।

10. निर्माण, पूजा, भारत के हिन्दी राज्य–हरियाणा, (2008), महक साहित्य संसार, दिल्ली।

11. यादव, के.सी., 1857– द रोल ऑफ पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश, नेशनल बुक ट्रस्ट (2008), इंडिया।

12. शंकर, आकाशदीप, अनु. भारत के राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश, 2005, पेंगुइन बुक्स इण्डिया, नई दिल्ली, हिन्दी का प्रथम संस्करण, पृ.सं. 53।

13. गुप्ता, आर.एन., हरियाणा सामान्य ज्ञान, (2003), रानी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

14. जयप्रकाश, हरियाणा लोक साहित्य का सामाजिक अध्ययन, (2008), हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला।

15. शर्मा, एस.के., संपादक, हरियाणा, पास्ट एण्ड प्रेजेंट, (2005), वॉल्यूम–1, मित्तल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

सामाचार पत्र

2. दैनिक जागरण

3. दैनिक भास्कर

5. हरिभूमि

7. जन युग

8. दैनिक ट्रिब्यून

10. हिन्दुस्तान

वेबसाइट

www-haryana-gov-in/knowharyana/haryanaglance-htmlaccessedon

https://bhiwani.gov.in/

www-census 2011.com.in

http://www.districts of india.com

http://en.m.wikipedia.org

http://en.wikipedia.org/wiki/haryana